लोबेतो

❑ फैन्नी अब्रामोविच

जोस बेन्तो मोन्तेरियो लोबेतो ब्राजील के सबसे महत्त्वपूर्ण बाल साहित्य के रचयिता माने जाते हैं। 18 अप्रैल, 1882 को जन्मे लोबेतो एक कृषक परिवार से थे। वे बड़े होकर वकील बने पर वकालत मे उनका मन नहीं लगता था। वे चित्रकार बनना चाहते थे। 1907 में वे एरियास चले गए। उनका विवाह मारिया पुरेजा से हुआ और उनके तीन बच्चे हुए। लोबेतो यूं तो सरकारी वकील थे पर उनकी रुचि के काम थे, चित्र बनाना, किताबों की भूमिकाएं लिखना और अपने खेत पर कृषि के नए तरीकों के प्रयोग करना। इन्हीं दिनों उन्होंने अपने प्रसिद्ध चरित्र जेका तातू की रचना की और ब्राजील की लोक कथाओं के प्रसिद्ध पात्र साची पर शोध किया। 1918 में उनकी कहानियों का पहला संकलन प्रकाशित हुआ और उन्होंने अपना एक प्रकाशन संस्थान शुरू करके नए लेखकों की रचनाएं छापना तथा छपाई और पुस्तक सज्जा के नए तजुर्बे करना शुरू किया। 1920 में उनका दीवाला निकल गया। इसके बाद उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति 'प्यारी सी नाक वाली नन्हीं लड़की' प्रकाशित कराई । यह किताब स्कूलों के कोर्स में शामिल हो गई और खूब लोकप्रिय हुई । इसके बाद रियो डि जनेरो में लोबेतो ने पुनः प्रकाशन का व्यवसाय शुरू किया।

1927 में उन्हें न्यूयार्क में दूतावास के वाणिज्य अताशे के पद पर कार्य का प्रस्ताव दिया गया। इस पद पर उन्होंने चार साल काम किया। वे हेनरी फोर्ड, धातु विज्ञान और खनिज तेल उद्योग से काफी प्रभावित थे और 1929 के स्टॉक मार्केट पतन में उन्होंने अपनी सारी जमापूंजी गंवा दी। ब्राजील लौट कर उन्होंने देश के खनिज तेल की रक्षा का अभियान शुरू किया और इसके तहत भाषणों, पत्रों और प्रचार माध्यमों के जरिए लोगों को देश के विकास में खनिज तेल के महत्त्व के बारे में बताना शुरू किया। इस अभियान के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस दौरान उन्हें अहसास हुआ कि वे एक लेखक के रूप में कितने लोकप्रिय हैं। इन्हीं दिनों उनका वैचारिक झुकाव साम्यवाद की ओर हो गया। जीवन का शेष भाग उन्होंने पूरी तरह लेखन को समर्पित कर दिया। वे अनेक भाषाओं के जानकार थे और कई भाषाओं से उन्होंने अनुवाद भी किए। जोस लोबेतो की कहानियां, निबंधों आदि की कुल 34 किताबें प्रकाशित हुईं जिनमें से 17 बच्चों के लिए हैं। 1948 में उनका देहावसान हो गया।

यहां फैन्नी अब्रामोविच की पत्र शैली में लिखी एक कथा का रूपान्तर प्रस्तुत है जिसमें लोबेतो के साहित्य को बचपन से लेकर बड़े होने तक की अवस्थाओं में एक पाठक की नजर से पेश किया गया है।

फैन्नी अब्रामोविच बच्चों के लिए किताबें लिखती हैं और उनकी इच्छा है कि काश, वे अपने पाठकों को उस आनंद का दसवां हिस्सा भी दे पातीं जो लोबेतो ने उन्हें हमेशा दिया।

आनन्द की खोज

प्रिय लेलिन्हा,

इस हफ्ते एक इतनी अच्छी बात हुई कि मैं तुरंत उसे बताने को उतावली हूं। मैं स्कूल की लाइब्रेरी गई थी और यूं ही एक किताब उठा ली। मान्तेरियो लोबेतो की लिखी 'प्यारी सी नाक वाली नन्ही लड़की'। मैं उसे पलटने लगी। मुझे वह कोई खास पसंद नहीं आ रही थी क्योंकि वह काफी मोटी किताब थी, ऐसी मानो कभी खत्म नहीं होगी। लेकिन फिर भी उसकी शुरूआत के कुछ पन्ने मैंने पढ़ लिए। उसके बाद के भी थोड़े से और। इसके पहले कि मुझे पता लगे वक्त बीत गया और घंटी बज गई; मैं उस

किताब से आंखें हटा ही नहीं पा रही थी। लंबी सांस भरकर मैंने उसे लाइब्रेरी से जारी करवाया और घर ले गई। उस पूरे दिन मैंने और कुछ नहीं किया। पूरी रात भी नहीं। अगले दिन सुबह भी उसे ही पढ़ती रही। अगले पूरे दिन भी। जब तक किताब खत्म नहीं हो गई मैं पलक भी नहीं झपक सकी।

उसमें इतनी प्यारी बातें हैं कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जैसे कि जब प्यारी नाक वाली की शादी बिना शक्ल वाले राजकुमार से होती है और श्रीमती मकड़ी उसके लिए रंगों से एक गाउन बनाती हैं, इतना सुंदर कि उसे देख कर आइना की भी आंखें फटी रह गई और वह छह टुकड़ों में बिखर गया। मैं बड़ी होकर वैसा ही एक गाउन बनवाऊंगी अपने लिए। नहीं बनवा पाई तो मैं मर ही जाऊंगी। जब वे दोनों साफ पानी के देश में घूमने जाते हैं तो मेरा मन किया कि उनके साथ जाऊं और उस उतनी सारी सुन्दरता के बीच घूम-घूम कर नाचूं।

और जब जड़ी-बूटियों से बनी गुड़िया बोलने की गोली खाकर एकदम मशीनगन की तेजी से बोलने लगती है तब तो हंसते हंसते दम निकल जाता है। और फिर देखते ही देखते वह सचमुच की इंसान बन जाती है। वो हमेशा कुछ नया करती रहती है। खाली नहीं बैठती और हर एक से सीधे आंखों में देख कर बात करती है। वह तो खूब ही है।

इस किताब से तो मुझे सचमुच अचरज हुआ। मुझे लगता है कि बस कुछ होने ही वाला है और अचानक कुछ और ही हो जाता है। मैं इतना मजेदार और जादुई कुछ और सोच भी नहीं सकती। ये तो पूरी तरह से मजेदार है।

ये सब कुछ यलो वुडपैकर फार्म पर होता है। वहां केवल बच्चे हैं और दादियां-नानियां हैं। और एक सुअर है छोटी पूंछ वाला मार्केज जो सामने पड़ने वाली हर चीज को खा जाता है। और एमेलिया है जो हमेशा गड़बड़ी करती रहती है और एक मक्के का भुट्टा है जो हर चीज के बारे में सब कुछ जानता है; वो भुट्टों का सरदार है। बड़ी होकर मैं भी फार्म पर रहूंगी और खूब खुशी से रहूंगी। पूरी दुनिया में उससे अच्छी जगह नहीं है। फार्म इतना आरामदेय होता है जितना पुराना जूता।

जरा सोचो, मैं पूरे आठ साल की हो गई और मैंने आज तक मान्तेरियो लोबेतो की लिखी एक भी किताब नहीं पढ़ी थी। मैंने तो पूरी जिन्दगी बरबाद कर डाली। अगर तुमने उसका लिखा कुछ भी न पढ़ा हो तो अभी किताबों की दुकान जाकर उसकी किताबें लाकर पढ़ो। और तुम खुशी से सराबोर हो जाओगी।

प्यार और चुम्मियों के साथ

एलिस

प्रिय लेलिन्हा,

आज का दिन मेरे लिए गर्व का दिन है। मैंने प्राथमिक स्कूल पास कर लिया और इस मौके पर मुझे वो उपहार मिला जो मैं सबसे ज्यादा चाहती थी। मान्तेरियो लोबेतो की सारी किताबों का सेट। सत्रह किताबें, जिन्हें मेरा जी करता है प्यार से सहलाऊं और उनका स्वाद अपनी जीभ पर चखूं। मैंने वे सारी पढ़ डाली हैं कसम से। मेरा जब जो किताब पढ़ने का मन होता है मैं छांट सकती हूं।

सबसे पहले उन्हें लेती हूं, जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद हैं। ये सब इतना मजेदार होता है कि बस। फार्म के सारे लोगों के साथ जाना और आकाश गंगा की सैर करना और सेन्ट जार्ज को ड्रैगन के साथ लड़ते देखना और टूटे पंखों वाले फरिश्ते से मुलाकात जो इतना प्यारा है और फिर लौटकर आंटी नस्तासिया के कप केक का खाना। में उनके साथ आकाश की सैर को गई। काश कि मेरे पास भी थोड़ी-सी परियों की धूल होती तो मैं भी जब मेरा कहीं दूर जाने का बहुत मन करता जहां चाहे वहां जा सकती।

मुझे एमिलिया से सचमुच ईर्ष्या होती है क्योंकि उसने खुद अपने आप प्रकृति में इतना बड़ा सुधार कर दिया। भई वाह, वह भी है हिम्मती लड़की। उसने ईजादें कीं और तजुर्बे किए और बिना किसी से डरे सबका सामना किया। उसे जैसा ठीक लगता वैसी अनूठी चीजें वह बनाती और चिड़िया की तरह खुश रहती, इन्तजार करती कि देखें अब क्या होता है। उसे डांट फटकार भी मिलती लेकिन वह सब कुछ अनसुना कर देती और अपनी नन्हीं आंखें फाड़ कर कुछ ऐसा बेतुका कहती कि सब चुप होकर उसका मुंह ताकते रह जाते । उसके जैसी थोड़ी-सी भी हिम्मत पाने के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूं। मैं सोचती हूं कि क्या कभी मैं वैसी हिम्मती हो पाऊंगी... शायद किसी दिन....

एक और किताब जो मैं जल्दी ही पढ़ने वाली हूं वो है आकार की चाबी। उसमें सब बहुत छोटे हो जाते हैं और अपने नए आकार और कमजोरी के कारण इस इतनी बड़ी दुनिया में उन्हें क्या कुछ करना पड़ता है। ये हर वक्त कुछ नया आइडिया लगाने को मजबूर होते हैं, लोबेतो इतने चतुर हैं। वे लगातार हमें छेड़ते रहते हैं कि हम सोचते रहें कि अब क्या होगा।

यलो वुडपैकर फार्म मेरी सबसे प्रिय किताबों में से एक है। नन्हें अंगूठाराम का फार्म में रहने की इजाजत का पत्र लिखना, सारी परीकथाओं से नायकों का फार्म पर पहुंचना, सिंडरेला, स्नोव्हाइट, पीटर पैरख, कैप्टैन हुक, वंडरलैंड की एलिस, अलादीन यूनानी कथाओं के दानव और नाना बेन्टा का आराम से सबका स्वागत करना - और फिर रोमांच, भय, लड़ाइयां, चमत्कार, षड़यंत्र, अफवाहें सब कुछ आपको सिहरा देती हैं और चकरा देती हैं । मैं इस सबको बहुत बहुत बहुत प्यार करती हूं।

मान्तेरियो लोबेतो की पहली किताब मैंने बहुत पहले पढ़ी थी। तब से मैं बड़ी हो गई हूं, मेरे स्कूल बदले हैं, घर भी बदला है, खिलौने बदल गए हैं लेकिन एक चीज ज्यों की त्यों है। कि मैं यलो वुडपैकर फार्म पर रहना चाहती हूं।

मुझे इस बेहतरीन उपहार के लिए ढेर सारी चुम्मियां । मैं सचमुच इसे पाने लायक हूं।

प्यार

एलिस

सौंदर्य और विराटता

मेरी प्रिय लेलिन्हा,

कितनी अद्‌भुत बात है कि इतने बरसों से हम एक दूसरे को चिट्ठियां लिख कर सारी खास बातों और नई ताजी घटनाओं का साझा कर रहे हैं। आज मैं शिक्षा महाविद्यालय से ग्रेजुएट हो गई। अब मैं एक मान्यता प्राप्त अध्यापक हूं। अब देखना ये है कि प्यारी नाक वाली नन्हीं और छुटकू पीट के बिना बच्चों से ठसाठस भरे क्लास में मैं क्या कर पाऊंगी। उम्मीद है कि मुझमें नाना बेन्टा जैसा धैर्य व समझदारी और आंट नस्तासिया जैसी रचनात्मकता हो । मनाती हूं कि वे मुझे रास्ता दिखाएंगे।

कॉलेज में मेरा आखिरी असाइन्मेंट मान्तेरियो लोबेतो के बारे में था। मेरी तो मानो लॉटरी ही खुल गई। मैंने अपने बचपन की प्रिय किताबों की धूल झाड़ी और फिर से उन्हें पढ़ा। और फिर से मेरा मुंह खुला रह गया, मैं कभी हंसी कभी रोयी कभी चकित रह गई।

अब मुझे जो बात सबसे खास लगती है वो ये कि कैसे वह कभी वास्तविकता और कल्पना में भेद नहीं करता। इनके बीच कोई सीमा नहीं होती। वह जैसी सहज गति से एक से दूसरे में आ जाता है उसका जायका ही अनूठा है। मैंने बच्चों के खेलों के बारे में हजारों लेख पढ़े हैं लेकिन शायद लोबेतो ने एक भी नहीं पढ़ा। वो तो मानो सीधा पहुंचा और खेलना शुरू कर दिया । बच्चों और जानवरों को ऐसे खेल पसंद हैं जिनमें वे नया कुछ सीखते हैं और जिसमें उन्हें कुछ खोजने का अवसर मिलता है। वे ऐसे ही खेल खेलने निकलते हैं और नाना बेन्टा की आवाज सुनकर कप केक खाने लौट आते हैं।

और फिर बोलने वाले जानवर। चुप रहने वाली पाल्ड गाय, क्विंडिम, तगड़ा गैंडा, कुशल डॉक्टर घोंघा और भोजनभट्ट छोटी पूंछ वाला मार्केज, बोलने वाले गधे की बुद्धिमता सब के सब बिल्कुल इंसानों जैसे व्यवहार करते हैं, साथ रहते हैं मानो एक ही परिवार के सदस्य हों। सबकी तरह झगड़ते, प्यार करते हैं। खूब है वह सब, इनके लिए तो बस तालियां और मुकर्रर।

और इनके लिखने का तरीका भी क्या जायकेदार है। हर शब्द मानो कोई आलिंगन है, कोई मुस्कान। अपनी गिरफ्त में ले लेने वाला। वह बच्चों से बेतुकी, अटपटी, किसी मेक्सिकन आपेरा की तरह भावुकतापूर्ण और अर्थहीन बातें नहीं करता। बल्कि कई बार मुश्किल लफ्जों का इस्तेमाल भी करता है। उसे भरोसा है कि उसका नन्हा पाठक समझदारी से उस नए शब्द का अर्थ ढूंढ़ेगा। और सबसे बढ़कर वह जिस तरह से नए मजेदार शब्द गढ़ता है उसका तो कोई सानी नहीं।

मैंने बड़ों के लिए लिखी लोबेतो की कई किताबें पढ़ी हैं। वे इतनी मोहक नहीं हैं। उसमें वह जादू नहीं है। कुछ कहानियां अच्छी हैं, कुछ पत्र छूने वाले हैं, कुछ लेख सोचने को प्रेरित करते हैं लेकिन वैसे अनूठे नहीं हैं जैसी बच्चों की किताबें। बड़ों की किताबें वैसी ही हैं जैसे दूसरे अच्छे लेखकों की किताबें। पर जहां बच्चों की किताबों की बात आती है वह एक ऐसी अनोखी दुनिया रचता है जो लासानी है। उसके जैसा बच्चों का लेखक कोई दूसरा नहीं है।

अरे मैं तो भूल ही गई। अब मेरी प्रिय किताब है एमिलिया की यादें। मेरे ख्याल से पूरी जिंदगी मैं उसे अपने साथ रखूंगी। एमिलिया - मैं उसके जैसी ही होना चाहती हूं। मैं उसकी भक्त हूं।

अध्यापक की ओर से एक चुम्मा।

एलिस

आलोचनात्मक मस्तिष्क और ब्राजीली भावनाएं

मेरी प्रिय लेलिन्हा

समय किस तेजी से बीतता जा रहा है। अब मैं 25 वर्ष की हो गई हूं और चौथी कक्षा के छात्रों को पढ़ा रही हूं। मैं छात्रों की जरूरतों और उनसे अपेक्षाओं के अनुसार पढ़ाने के तौर तरीके बदलती रहती हूं। लेकिन एक चीज जो नहीं बदलती वह है बच्चों को लोबेतो को पढ़ाना। वह तो अनिवार्य है।

जब मैं बहुत छोटे बच्चों को पढ़ा रही थी तब उन्हें यलो वुडपैकर फार्म की कहानियां सुनाती थी। वे विस्फारित आंखें लिए सुनते रहते । अब थोड़े बड़े छात्रों को मैं यूनानी पुराकथाएं पढ़ा रही हूं। ओलिंपस के रहस्यों से पर्दा उठाना हो तो लोबेतो से अच्छा कौन है। मैंने यूनानी मिथकों के बारे में जो भी जाना लोबेतो को पढ़कर ही जाना। मेरे विद्यार्थी भी उतने ही चमत्कृत हैं जितना मैं थी। वे इन पाठों के दौरान उत्साहित होते हैं और उत्तेजित होते हैं। केवल पाठ का बोझा नहीं ढोते।

मैंने लोबेतो की तैयार की हुई पाठ्यपुस्तकों को भी देखा है। दुर्भाग्य से वे अब पुरानी पड़ गई हैं। लेकिन आज भी उनकी टक्कर की पाठ्यपुस्तकें नहीं हैं। आज एमिलिया की गणित, नाना बेन्ता का भूगोल और व्याकरण की किताब सामयिक संदर्भों से कट गई

हैं। लेकिन किसी भी अध्यापक को ये हमेशा रोचक पाठ्य सामग्री तैयार करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। अचरज का तत्व इनका रहस्य है।

मुझे जब मौका मिलता है मैं लोबेतो की लिखी कथाएं पढ़ती हूं। विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि देने, सजग बनाने, अपने निष्कर्ष खुद तय करने लायक बनाने में इन कथाओं का कोई मुकाबला नहीं है। वे लोबेतो के खास अंदाज के व्यंग्य और परिहास तथा सादगी से मुतासिर होते हैं। इन सब मसालों को मिलाने का वह उस्ताद कीमियागर है।

लोबेतो की एक जिस बात ने मुझे हमेशा प्रभावित किया है वह है उसकी गैर व्याकरणसम्मतता। वह किसी भी बेतुके नियम कायदे के खूंटे से बंधे बगैर लिखता है। एक जगह उसने लिखा है- आप सोच नहीं सकते कि बच्चों के लिए अपने लिखे को साहित्यिकता से मुक्त रखने में मुझे कितना जोर आता है। जब भी मैं अपने लिखे को नए सिरे से जांचता हूं, कहीं न कहीं साहित्यिकता के टुकड़े छिपे दिख जाते हैं। मैं उन्हें वैसे ही मार देता हूं जैसे खटमल मारे जाते हैं।... मैं चाहती हूं कि मेरे छात्र भी ऐसे ही लिखना सीखें-मुक्त, सहज और कल्पनाशील होकर।

एक और बात जो मुझे मोन्तेरियो लोबेतो में प्रभावित करती है वह है हर ब्राजीली चीज के साथ उनका लगाव। बाकी दुनिया से काटे बिना कोई और लेखक ब्राजील से इस कदर मुझे नहीं जोड़ पाया। यहां के जानवर, पेड़-पौधे, मौसम, मिट्टी, लोककथाएं, और जीवनशैली इस जीवंतता और विस्तार के साथ उनके लेखन में मौजूद है कि वह बिना सीधे देश प्रेम की बात कहे भी पढ़ने वाले में ब्राजील के प्रति प्यार जगा देते हैं। एक ऐसी देशभक्ति जो सचेत और रचनात्मक है न कि बचकानी और भावुकतापूर्ण।

और सोचने की बात यह है कि उन्हें ब्राजील के खनिज तेल को बचाने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया । अपने देश को प्यार करने के लिए। अगर देशभक्ति की यह कीमत है तो मैं भी इसे चुकाने के लिए तैयार हूं। मैंने उन्हीं से सीखा है कि अपनी आस्थाओं से भागना नहीं चाहिए उनके लिए लड़ना चाहिए।

ढेर सारे ब्राजीली चुम्बनों के साथ,

एलिस

अनूठापन और स्थायित्व

मेरी प्यारी दोस्त लेलिन्हा,

कई साल बीत गए हमने मोन्तेरियो लोबेतो के बारे में बात नहीं की। अब मैं चालीस पार कर चुकी हूं और हाल ही में मैंने एक बार फिर उनकी सारी किताबों को पढ़ा। बच्चों वाली 17 किताबों को। वे मेरे जीवन का सबसे कीमती खजाना हैं।

अब मेरी आंखें उतनी भोली नहीं रहीं और मैं आसानी से किसी चक्कर में नहीं पड़ती। मुझे लगता है कि उनकी अंतर्दृष्टि अद्‌भुत है। फार्म पर केवल दो बच्चे हैं। एक तो प्यारी नाक वाली लड़की जिसके मां-बाप हैं नहीं और दूसरा नन्हा पीट जिसकी मां केवल पहली कहानी में एक बार आती है बाद में उसका कोई जिक्र नहीं है। बच्चों का लालन-पालन उनकी दादी-नानी करती हैं जो काफी मजेदार और खिलंदड़े स्वभाव की हैं। रोक-टोक करने वाले अभिभावकों का कहीं कोई जिक्र तक नहीं है। मेरे ख्याल से यह बड़ी बात है।

लोबेतो जानते हैं कि समस्याओं का सामना कैसे किया जाए। नाना बेन्ता सुसभ्य, समझदार, साफ सुथरा, गोरा आदमी है और आंट नस्तासिया घबराहट से भरी, अंधविश्वासी, अनाकर्षक, मोटे होंठ वाली अश्वेत औरत हैं। लेकिन पूरी कथा में मानो कहीं भी एक भी ऐसा उल्लेख नहीं है जिसमें रंगभेद की भनक भी पड़ती हो। और पूरे फार्म में नस्तासिया ही सबसे कर्मठ, रचनात्मक और सम्माननीय वयस्क हैं।

अपने ही ख्यालों में खोए रहने वाले अकादमिक किस्म के भुट्टों के सरदार को जो मूलत: सच्चाई से भागने वाला इंसान है लोबेतो सबसे कम पसंद करते हैं। दूसरी तरफ एमिलिया है जो मुंहफट किस्म की गुड़िया है, किसी की परवाह नहीं करती और शायद ब्राजीली साहित्य की पहली फेमिनिस्ट है। इन दोनों के बीच प्यार और नफरत का अनूठा रिश्ता सचमुच जायकेदार है।

परंपरावादियों को लोबेतो से हमेशा तकलीफ होती रही। 1942 में उनके लिखे विश्व इतिहास की कुछ लोगों ने होली जलाई थी। यह बर्बरता है। इससे लोबेतो का क्या बिगड़ना था। आज के स्कूलों में होली तो नहीं जलाई जाती लेकिन लोबेतो को वैसे पढ़ाया भी नहीं जाता जैसे पढ़ाया जाना चाहिए। ये बच्चों का नुकसान है। गलती अध्यापकों और अभिभावकों की है। वे किसी भी नए सोच किसी भी आलोचनात्मक चरित्र से आंखें चुराते हैं। विवादों से दूर भागते हैं।

लोबेतो के किस्सों का फॉर्म एक बुद्धिमान, गतिमान और समरसता से भरे समाज का आदर्श सामने रखता है। जैसा कि एमेलिया कहती है, भेद की बात छोटी सी है-आजादी। किसी पर कोई बंधन नहीं हो। जंजीरें होना दुर्भाग्य है। और दुनिया भर में इतनी जंजीरें फैलती जा रही हैं। जीवन का लक्ष्य साफ है। आजादी या मौत।

लोबेतो की चिरंतन पाठक की ओर से ढेर सारा प्यार।

एलिस ◆